

Fourteenth Loksabha**Session : 5****Date : 26-07-2005****Participants : [Singh Shri Rajiv Ranjan](#)**

>

Title: Need to formulate policies for development by harnessing indigenous resources.

श्री राजीव रंजन सिंह 'ललन' (बेगूसराय) : अध्यक्ष महोदय, आजादी की लड़ाई के दौरान देश के आर्थिक विकास के लिए दो विचारधारायें चल रही थीं। एक थी दादा जी भाई नौरोजी की। वे कहते थे भारत का विकास अंग्रेजों के हित में है क्योंकि उनकी फैक्ट्रियों का माल भारत के बड़े बाजार में बिक सकेगा। दूसरी विचारधारा थी महात्मा गांधी जी की - उनका कहना था कि वित्तीय स्वशासन में कोई समझौता नहीं होना चाहिए। देश को स्व. संसाधनों का विकास करना ही देश की प्रगति के लिए आवश्यक है। पश्चिमी देशों की नकल से हम विकास नहीं कर सकते। कुशलतम उत्पादक के चक्कर में हम हमारे नौजवानों को बेकार करते जाये। यह विकास योजनाएं और विश्व में पश्चिमी उपभोग की आदतों ने पृथ्वी पर बोझ बढ़ा दिया है, पर्यावरण को नट कर दिया है, इससे बचना होगा। देश को अपने संसाधन और क्षमता को ध्यान में रख कर ही विकास का रास्ता चुनना होगा। विदेशी पूंजी विकास का रास्ता खोलती है पर वह गुलामी की जंजीरें भी बनाती हैं। विदेशी पूंजी स्वदेशी उद्यमता को बढ़ाने वाली होगी तो देश का संतुलित और सही विकास होगा और यदि यही पूंजी परावलम्बी उद्यमता को बढ़ाने वाली हुयी तो गुलामी के रास्ते भी सामने आयेंगे। अतः मेरा सरकार से आग्रह है कि हम अपने आर्थिक विकास के लिए नये सिरे से विचार करें और वर्तमान उदारवादी और मुक्त बाजार के वातावरण में देश का संतुलित विकास करते हुए, आगे बढ़ें।